ऑडियो नंबर-206　　कम्पिला　　17.06.86　　प्रातः क्लास

रिकॉर्ड चला है- नयनहीन को राह दिखाओ प्रभु...। बच्चों ने गीत सुना। यह भक्त भगवान को पुकारते हैं। भगवान को पूरा न जानने के कारण मनुष्य कितने दुःखी हैं। भक्तिमार्ग में कितना माथा मारते हैं। सिर्फ इस जीवन की बात नहीं है। जब से भक्तिमार्ग शुरू हुआ है तब से धक्के खाते आते हैं। ऐसे नहीं, ज्ञान में आने के बाद भी धक्के खाते हैं। बहुत जन्म हो चुके धक्के खाते-खाते, तो वो रग पड़ी हुई है।

भारत में ही देवी-देवताओं का राज्य था जिसको स्वर्ग/सचखण्ड कहा जाता था। अभी तो भारत झूठखण्ड है। भारत में स्वर्ग की महिमा बड़ी जबरदस्त है; क्योंकि भारत मातपिता या परमपिता परमात्मा का बर्थ प्लेस है। उनका असल नाम 'शिव' है। किनका? जिनका भारत बर्थ प्लेस है। किसके तन में बैठके बोला? ब्रह्मा के तन में बैठके बोला। बैठा है ब्रह्मा के तन में, बोलने वाला बाजू में ही बैठा है। बोलने वाली तो आत्मा है ना, सुप्रीम सोल ब्रह्मा की आत्मा के बाजू में ही बैठकर मुख द्वारा बोल रहा है। क्या बोल रहा है? उनका नाम 'शिव' है। दूर क्यों कर दिया ? दूर क्यों किया जब बाजू में ही बैठा है? दूर इसलिए किया कि जिस पार्ट, प्रैक्टिकल परमात्म-पार्ट की तरफ इशारा है वो भविष्य में बजने वाला पार्ट है। कोई स्थूल जन्म तो है नहीं, ये तो प्रत्यक्षता रूपी दिव्य जन्म है। भारत में ही भगवान प्रत्यक्षता रूपी जन्म लेता है।

शिव जयन्ती मनाते हैं, रुद्र वा सोमनाथ जयंती नहीं कहा जाता है। जयंती अर्थात् अंत में जय-जयकार, प्रत्यक्षता की जय-जयकार। रुद्र जयंती क्यों नहीं कहते? रौद्र रूप धारण करने वाले की जय-जयकार थोड़े ही; शिव की जय-जयकार, कल्याणकारी की ही जय-जयकार। ऐसे तो रौद्र रूप धारण करना भी कल्याणकारी है। सोम चंद्रमा को कहा जाता है और नाथ माना नाथने वाला स्वामी, कंट्रोल में रखने वाला। जैसे सजनियों को साजन नाथ (नथनी) डाल देते हैं, नथनी डाली जाती (ना) है। अपने कंट्रोल में रखता है। तो सोमनाथ जयंती भी नहीं है। ये नाथ तो तब तक डाली जाती है जब तक बच्चे सम्पूर्ण नहीं बने हैं। कोई त्रुटि है, कोई अवगुण हैं। जब आत्माएँ सम्पन्न बन

जाती हैं तो उनको कंट्रोल करने की दरकार नहीं, स्वतः ही कंट्रोल्ड होती हैं। तो सोमनाथ जयंती भी नहीं गाई जाती। शिवजयंती वा (महा)शिवरात्रि कहा जाता है।

शिवजयंती ब्राह्मण कहते हैं और शिवरात्रि भक्तिमार्ग वाले कहते हैं; क्योंकि वो तो जानते ही नहीं हैं कि शिव ने आ करके कोई प्रत्यक्षता रूपी दिव्य जन्म लिया है। अभी तो सभी नयनहीन हैं, बुद्धिहीन हैं, अंधे की औलाद अंधे; क्योंकि सभी में 5 विकार प्रवेश हैं। दृष्टि ही दूषित है। जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि में सब चीज़ें दिखाई पड़ती हैं। इसलिए परमात्मा बाप को पहचान नहीं सकते। रावण ने ही नयनहीन/अंधा, बुद्धिहीन बनाया है। एक/दो को दुःख देते ही रहते हैं।

भारत जब स्वर्ग था तो दुःख का नाम नहीं था। स्वर्ग की स्थापना करने वाला हैविनली गॉडफादर। नाम ही है 'हैविनली गॉडफादर', तो ज़रूर हैविन की स्थापना करने वाला है। कोई मनुष्य हैविन की स्थापना नहीं कर सकता।

अब सभी भक्तों का भगवान तो ज़रूर एक होना चाहिए। सभी नयनहीन हैं अर्थात् ज्ञान के चक्षु वा डिवाइन इनसाइट नहीं है। भगवानुवाच- मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ। श्रीमत् भगवत् गीता है मुख्य। श्री अर्थात् श्रेष्ठ मत। अब तुमको बुद्धिवान बनाया जाता है- श्रेष्ठ मति वाला, श्रेष्ठ बुद्धि वाला। दिव्य चक्षु अर्थात् ज्ञान का तीसरा नेत्र दिखाते हैं। वास्तव में ज्ञान का तीसरा नेत्र तुम ब्राह्मणों को मिलता है। जिससे तुम बाप को और बाप की रचना के आदि-मध्य-अंत को जान जाते हो। चूँकि भक्तिमार्ग में तीसरा (शिव) नेत्र किसको दिखाया है? शंकर को दिखाया है, देवी को भी दिखाते हैं। तो ये तुम्हारा सम्पूर्ण स्टेज का यादगार है, जबकि तुम्हारी ज्ञान चक्षु पूरी खुल जाती है। माया रावण ने बिल्कुल सबको अंधा बनाय दिया है।

इस समय सर्वव्यापी है देह-अहंकार, यह 5 विकार। इसलिए घोर अंधियारे में हैं। तुम बच्चों के पास रोशनी है। तुम्हारी आत्मा सारे वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी को जान गई है। आगे तुम सब अज्ञान में थे। गाते भी हैं 'ज्ञान अंजन सतगुरू दिया, अज्ञान अंधेर विनाश।' तो सतगुरू का पार्ट (जब) शुरू होता है। तो उसकी निशानी क्या है? कि अज्ञान का अंधेरा बुद्धि में से नष्ट हो जाता है।

जो पूज्य थे वही फिर पुजारी बन पड़े हैं। पूज्य तो होते हैं रोशनी में। रोशनी माना? ज्ञान की रोशनी। ज्ञान के प्रकाश में होते हैं। उनको किसी की पूजा करने की दरकार नहीं। और पुजारी हैं अंधियारे में। जब तक पूजा करते हैं, अर्चना करते हैं, देहधारियों की महिमा करते हैं तब तक अंधियारे में; क्योंकि वास्तव में देहधारियों की कोई महिमा है नहीं। महिमा सिर्फ किसकी है? एक परमपिता परमात्मा की महिमा है जो घोर अंधियारे से सोझरा करने वाला है।

परमात्मा को आपे ही पूज्य, आपे ही पुजारी नहीं कह सकते। वह तो है ही परम पूज्य। न वो (शिवबिंदु) पूज्य बनता है, न पुजारी बनता है। वो है सबको पूज्य बनाने वाला+ उनको कहा जाता है- परम पूज्य परमपिता+परमात्मा। परम आत्मा (हीरो) माना परमात्मा। कैसी आत्मा? (किसी ने कुछ कहा-परम आत्मा) आत्मा तो है! साधारण आत्मा नहीं । लेकिन (सृष्टि-मंच पर) परम पार्ट बजाने वाली आत्मा।

तो परमपिता और परमात्मा में क्या फर्क हुआ? वो पिता है; लेकिन परमपिता है। उससे बड़ा कोई पिता होता नहीं। वो प्रजापिता का भी पिता है। बापों का बाप (सभी), धर्मपिताओं का बाप तो है ही; लेकिन प्रजापिता (आदम/अर्जुन/आदिदेव) का भी पिता है। इससे ऊँचा कोई पिता होता नहीं। और परमात्मा? आत्माएँ जो जन्म-मरण के चक्र में आने वाली हैं, सुख-दुःख का पार्ट बजाने वाली हैं, उन आत्माओं के बीच में जो परम पार्ट बजाने वाली (हीरो) आत्मा है, वो है परम आत्मा। जैसे कहते हैं- शिवशंकर। तो पहला नाम किसका? शिव का। बाद में? शंकर का। तो कौन छोटा हुआ, कौन बड़ा हुआ? शिव बड़ा हुआ, शंकर उसका बच्चा है। तो इसी तरह परमपिता पहले; क्योंकि वो आत्माओं का पिता है, दूसरा कोई सम्बंध नहीं। वो हम आत्माओं का पिता है, हम उसके बच्चे हैं, बच्चियाँ भी नहीं। तो (हमारा) आपस में भाई-बहन का भी संबंध नहीं। तो बिंदु-2 आत्माओं का वो बिंदु सुप्रीम सोल पिता है और ऊँच-ते-ऊँच है, परमपिता है। तो 'पिता' शब्द पहले- फिर परमपिता, (और) परमात्मा, जिसमें वो प्रवेश करता है। प्रवेश करके परमात्म-पार्ट बजाता है।

कृष्ण को थोड़े ही ऐसे कहेंगे। क्या? परमपिता परमात्मा। क्योंकि कृष्ण तो (यादगार मंदिरों में भी) बच्चा है। बच्चे ने किसी से तो जन्म लिया होगा! पावरफुल कौन होता है- बच्चा या बाप? बाप पावरफुल होता है। बाप रचयिता कहा जाता है, बच्चा रचना होती है। रचना को रचयिता के कंट्रोल में चलना पड़ता है। तो कृष्ण के लिए ऐसे नहीं कह सकते कि परमपिता+परमात्मा। इसलिए मुरली में आता है- ''राम बाप को कहा जाता है।'' (मु.ता.6.9.70 पृ.3 मध्य) कृष्ण तो बच्चा है। बच्चा का मतलब? बच्चाबुद्धि हो करके पार्ट बजाने वाली भोली-भाली आत्मा है।

तो कृष्ण को सब (धर्म वाले) गॉडफादर नहीं कहेंगे। निराकार गॉड को ही सब गॉडफादर कहते हैं। निराकार को? निराकार का मतलब ये नहीं कि सिर्फ (अणुरूप) बिंदु को गॉडफादर कहते हैं। निराकारी स्टेज वाले का गायन है। है वह (परमपिता शिव) भी आत्मा; परंतु परम है। इसलिए उनको (परमपिता+) परमात्मा कहा जाता है (जैसे शिव+शंकर) ।

आत्माओं और परमात्मा का रूप एक है। सिर्फ हम आत्मा हैं, वह (आत्माओं में हीरो) परमात्मा है। सदैव परमधाम (ब्रह्मलोक) में रहने वाला है। स्थिति, जिसमें वो स्थित होता है वो स्थान कैसा है? परम, परे-ते-परे यानी उसको कोई क्रॉस नहीं कर सकता। वो सबको क्रॉस करके बैठने वाला है; लेकिन उसको कोई क्रॉस नहीं कर सकता। अंग्रेज़ी में उनको सुप्रीम सोल कहा जाता है।

बाप कहते हैं तुम गाते भी हो, आत्मा-परमात्मा अलग रहे बहुकाल ऐसे नहीं, परमपिता(सदाशिव), परमात्मा से अलग रहे बहुकाल... बहुकाल । यह पहले नंबर का अज्ञान है →'आत्मा सो परमात्मा', 'परमात्मा सो आत्मा' कहना, मरण में आती है' ये बहुत बड़ा अज्ञान है। आत्मा (का) तो जन्म-, परमात्मा थोड़े ही (बेहद के) जन्म-पुनर्जन्म में आते हैं। ब्राह्मणों की दुनियाँ का जन्म (तो) है मरण बेहद का कौन-सा है? निश्चय पैदा हुआ, पक्का हुआ, जैसे बाप का बच्चा बना, जन्म लिया और निश्चय उखड़ गया जैसे मर गया, ब्राह्मणपने से मृत्यु हो गई; क्योंकि ब्रह्मा बाप को भूल गया। तो परमात्मा भी क्या जन्म-मरण के चक्र में आता है? जो प्रैक्टिकल परमात्मा में निश्चय (का आधन्त) पार्ट बजाने वाला स्वरूप होगा उसको भी अनिश्चय होगा क्या? इसलिए

बोला ठिक्कर बुद्धि में प्रवेश नहीं करता । मैं पत्थर हूँ- (क्या?) ठिक्कर कहते हैं मिट्टी का ढेला, थोड़ी-सी माया की ठोकर लगे और ज्ञान में से टूट जाए, ऐसों में मैं (मुकर्रर) प्रवेश नहीं करता। मैं (सर्व)व्यापक नहीं हूँ।

बाप बैठ समझाते हैं- तुम भारतवासी स्वर्गवासी, पूज्य थे। ह्युमिनिटी के पूज्य सब देवी-देवताएँ थे। यह सारी ईश्वरीय फैमिली है। तुम मात-पिता, तो ईश्वर है रचयिता। गाया भी जाता है- 'हम बालक तेरे'। तो फैमिली हो गई ना! फैमिली में पहले-2 कौन होते हैं? मात-पिता। कौन हुआ पहले? माता भी होनी चाहिए और माता है तो ज़रूर है, पिता भी है और दोनों अलग-2 होंगे कि एक ही होगा? अलग-2 होंगे। फिर ये क्यों कहा- तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो? तू ही माता है, तू ही पिता है- इसका क्या मतलब हुआ? एक है या दो हैं? है तो सुप्रीम सोल एक ही; लेकिन रुद्रमाला के जो फर्स्ट दो मणके हैं, (महाकाल-महाकाली ←) उन दोनों में प्रवेश करता है, एक साथ। (महाकाली को भी तीसरा शिवनेत्र दिखाते हैं।)

सृष्टि की जब पैदाइश होती है तो ये नहीं कह सकते कि माँ ने बच्चे को पहले पैदा किया या बाप ने पहले पैदा किया। पैदाइश की (पहली) एक्टिविटी दोनों की साथ-2 होगी। हाँ, ये अंतर है कि माता भावना वाली होती है और पिता बुद्धिवादी होता है। तो यज्ञ के आदि में भी वो सुप्रीम सोल (शिव) ज्योतिबिंदु (मात-पिता के) दोनों रूपों में पहले-2 प्रत्यक्ष होता है।

सिंध हैदराबाद में ब्रह्मा को साक्षात्कार हुए; लेकिन सिंध हैदराबाद भारत के पश्चिम में है या पूरब में? पश्चिम में है। पश्चिम में (ज्ञान-) सूर्य उदय होता है कि अस्त होता है? (किसी ने कहा- अस्त होता है) तो वहाँ (सूर्यादय का अभी) का यादगार नहीं है। वहाँ माउण्ट आबू में यादगार है, कौन-सा? सूर्यास्त का, सन सेट प्वॉइंट। लेकिन परमात्मा बाप (भारत के) पूरब में प्रत्यक्ष होता है; क्योंकि वो ज्ञान-सूर्य है। तो ब्रह्मा को साक्षात्कार होने से ये साबित नहीं होती कि उनमें परमात्मा (ने) ज्ञान सूर्य ने प्रवेश करके प्रत्यक्षता रूपी जन्म लिया; क्योंकि उनकी प्रवेशता का तो किसी को पता ही नहीं चलता। मुरली में बोला हुआ है- ''मैं जब आता हूँ तो किसी को पता पड़ता है क्या?'' इस ब्रह्मा को पता पड़ता है क्या? नहीं।"(मु.ता.26.1.68 पृ.1 आदि) इसलिए मेरी शिवजयंती की

तिथि-तारीख निश्चित नहीं हो सकती। तुलसीदास, सूरदास, मीरा को भी साक्षात्कार हुए। तो साक्षात्कार होने से क्या ये साबित हो जाता है कि (परमपिता) परमात्मा ने उनमें प्रवेश कर लिया? साक्षात्कार होना अलग बात और परमात्मा का प्रवेश होना अलग बात। तो ब्रह्मा को, माना कृष्ण की सोल को साक्षात्कार तो हुए; लेकिन परमात्मा ने उस समय उनमें प्रवेश नहीं किया। हाँ, साक्षात्कार करने वाले भक्त जो होते हैं, वो अपने तरीके से अपनी अटकलें लगाते हैं।

साक्षात्कार का भी असली अर्थ (एडवांस) ज्ञान के तीसरे नेत्र (धारी शंकर) के बगैर कोई लगाय नहीं सकता। जैसे मम्मा के लिए साक्षात्कार हुआ, गुलज़ार दादी को कि मम्मा ने नेपाल में जन्म लिया, तो नेपाल में सेवाकेंद्र स्थापन कर दिया। फिर साक्षात्कार हुआ कि मम्मा लंदन में काम कर रही है। फिर तीसरी बार साक्षात्कार में देखा कि मम्मा दिल्ली ज़ोन में है। तो एक मम्मा तीन जगह स्थूल जन्म लेगी क्या? स्थूल जन्म की बात ही नहीं है। तीनों बातें एक ही हैं। साक्षात्कार को न समझने के कारण ये गलत-2 बातें बुद्धि में पैदा हो गईं । नईपाल का मतलब है- (एडवांस ज्ञान वाली) नई दुनिया की पालना करने वालों का देश। वो तो नई दुनिया की पालना करने वाले हैं ही एडवांस पार्टी की कुछ चुनी हुई (B.K की) आत्माएँ, जो नया संगठन (N.S.) बनाते हैं। वही नया संगठन रूपी किला कहो, नया संगठन रूपी (पु.) सतयुग कहो, उसका फाउंडेशन डालने वाली (P.B.K.) आत्माएँ हैं। तो मम्मा वहाँ कार्य कर रही है माना नई+पाल में। फिर लंदन, लंदन का अर्थ क्या बताया? लेन-देन होता (ज्ञान-) रत्नों का जहाँ सबसे जास्ती लेन-देन करना। (एडवांस) ज्ञान दिल्ली ज़ोन में है। वहाँ मम्मा (प्रवेश होकर) कार्य कर रही है। और फिर बताया- कि स्वर्ग की स्थापना (खास मानसी शूटिंग) कहाँ होनी है? दिल्ली में ही होगी। सबसे जास्ती ईश्वरीय (एडवांस) सेवा का घिराव कहाँ पड़ना है? दिल्ली में। तो ज्ञान का लेन-देन (लंदन=ज्ञान का लोन+देन) भी सबसे जास्ती कहाँ होगा और नई दुनिया की (शूटिंग में) पालना भी कहाँ होगी? दिल्ली। तो (ऊपर की) तीनों बातें एक ही (जगह) तो हो गईं। लेकिन अर्थ न समझने के कारण साक्षात्कार का अनर्थ हो जाता है और पुरुषार्थ में टाइम वेस्ट होता रहता है ।

तो ब्रह्मा बाबा को साक्षात्कार हुए थे; परंतु परमात्मा शिव ने प्रवेश नहीं किया। गुरू से पूछा, अनभिज्ञता जाहिर की, गुरुओं से श्रद्धा हट गई। फिर सोचा कि विद्वान, पंडित, आचार्य बनारस में

ज़्यादा हैं। वहाँ पहुँचे। वहाँ भी उनको कुछ प्राप्ति नहीं हुई। तो उनको अपने जीवन में जो प्रैक्टिकल अनुभव हुआ था, जिस भागीदार के ऊपर उन्होंने अपनी सारी (हीरों की) दुकान छोड़ी हुई थी- उसकी होशियारी को और उसकी सदाचारिता को देखकर और उसके सच्चाईपने को देख करके, वो बात उसको याद आई और बाबा पूर्वी बंगाल कलकत्ते में पहुँचे, जहाँ उनकी पुरानी दुकान थी। जहाँ से उन सृष्टि रूपी रंगमंच के जो माता-पिता का पार्ट बजाने वाली आत्माएँ हैं, उनको प्रत्यक्ष होना था।

तो परमात्मा शिव पहले-2 प्रवेश करते हैं उन दो आत्माओं में जो सृष्टि रूपी रंगमंच के पहले दो मणके हैं, जिनसे राधा (मम्मा) और कृष्ण (ब्रह्मा के पार्ट) की प्रत्यक्षता होती है। कौन-से राधा-कृष्ण? (किसी ने कहा-सतयुग के कृष्ण) नहीं। जिनका शास्त्रों में वर्णन है-(16 कला) सतयुग के राधा-कृष्ण, वो संगमयुगी राधा-कृष्ण (ब्रह्मा-सर.) की प्रत्यक्षता होती है। तो वो सृष्टि के (संगमयुगी) मात-पिता हुए, जो भागीदार था और उसकी सहयोगिनी शक्ति (उन) दोनों में परमपिता (शिव) प्रवेश करके एक (माता) के द्वारा सुनने और सुनाने का कार्य करते हैं (क्योंकि) ब्रह्मा उस माता को पहले अपने साक्षात्कारों की बात सुनवाता है। माता सुनती भी है और फिर प्रजापिता को/भागीदार को सुनाती भी है। तो सुनने-सुनाने का भक्तिमार्ग का फाउंडेशन माता के द्वारा पड़ता है एक साथ और दूसरी ओर, बाप अर्थात् प्रजापिता के थ्रू परमपिता शिव उन साक्षात्कार, जो कि सुने और सुनाने का पार्ट ब्रह्मा के द्वारा नूँधा हुआ है, उसको माँ के द्वारा व्याख्या दी जाती है। माना? जो सुना हुआ है और जो सुनाया हुआ है, उसको छोटी माँ के द्वारा समझानी दी जाती है। समझ को ही ज्ञान कहा जाता है। तो ज्ञान का फाउंडेशन पिता के द्वारा। पिता होता है बीजरूप और माता होती है आधारमूर्त, उस ज्ञान के बीज को अपने बुद्धिरूपी पेट में धारण करने वाली। तो माता ने उस ज्ञान के बीज को धारण किया, पिता ने ज्ञान का बीज बोया। लेकिन, ये सब कब हुआ? जब सुप्रीम सोल ने दोनों में प्रवेश किया। इसलिए कहा जाता है- तुम ही हो माता, तुम ही हो पिता और जो आदि में हुआ सो अंत में भी होता है।

तो जो गाते हैं- तुम मात-पिता, हम बालक तेरे। तो ये फैमिली हो गई ना! कौन-सी फैमिली हो गई पहली-पहली? पहले ज्ञान-सूर्य बाप, फिर गीता माता, फिर कृष्ण बच्चा। तो ये फैमिली हो गई। कृष्ण बच्चा कौन हुआ? दादा लेखराज का पार्ट हुआ, कृष्ण बच्चे का।

अच्छा भला! तुम मात-पिता किसको कहते यह तो बताओ! यह कौन कहता है? आत्मा कहती है- तुम मात-पिता, हम बालक तेरे, तुम्हरी कृपा से स्वर्ग के सुख घनेरे। हमको स्वर्ग में सुख घनेरे मिले हुए थे। तुम मात-पिता आ करके स्वर्ग की स्थापना करते हो। वो स्वर्ग के सुख पहले-2 कौन प्राप्त करता है? 16108 आत्माओं का जो कम्प्लीट स्वर्ग स्थापन होता है-, उसका सुख पहले-2 ज़्यादा-से-ज़्यादा कौन प्राप्त करता है? कृष्ण। तो कृष्ण की आत्मा पहला बच्चा हुआ ना! तो आत्मा कहती है। आत्माओं में पहली-2 आत्मा ऐसी कौन-सी हुई जो बच्चे के रूप में पार्ट बजाती है? कृष्ण की सोल। तो गाते हैं- सुख घनेरे हमको स्वर्ग में मिले हुए थे। तुम मात-पिता आ करके स्वर्ग की स्थापना करते हो। तुम आ करके स्थापना करते हो प्रैक्टिकल में और उस स्थापना का लाभ हम बच्चे लेते हैं। तो हम आपके बच्चे बनते हैं।

बाप कहते हैं कि मैं संगम पर ही आ करके राजयोग सिखलाता हूँ। ऐसे नहीं, सतयुग में राजयोग सिखलाया तब तुमको राजाई मिली। राजयोग का रिज़ल्ट क्या है? राजयोग का रिज़ल्ट है राजाई। जिस तन में आ करके राजयोग सिखाता हूँ, उस तन के द्वारा राजाई भी देता हूँ, कंट्रोलिंग पावर देता हूँ, राजधानी स्थापन करता हूँ। राजधानी की स्थापना- ये किसी धर्मपिता ने नहीं की। वो सिर्फ आ करके अपना धर्म स्थापन करते हैं, राजाई स्थापन नहीं करते; क्योंकि राजाई स्थापन करने के लिए टक्कर लेनी पड़ती है। और किसी धर्मपिता में ये पावर ही नहीं थी जो पुरानेपन का विनाश करे, पुरानी राज्य सत्ताओं का विनाश करे, पुरानी धर्म सत्ताओं का विनाश करे। उन्होंने एक छोटे-से वर्ग में आ करके अपनी मान्यता स्थापन कर दी। फिर वो बाद में बढ़ता रहा। लेकिन परमात्मा उन धर्मपिताओं के मुकाबले कुछ विशेष करता है, जो दुनिया में कोई नहीं कर सकता। वो आता है तो पुरानेपन का विनाश भी करता है। जब तक पुरानी धारणाओं का, पुरानी मान्यताओं का, पुराने कचड़े का विनाश नहीं होता, पुराने धर्मों का नाश नहीं होता, तब तक नए धर्म की, नए राज्य की

स्थापना प्रत्यक्ष नहीं हो सकती। तो ये परमात्मा बाप का काम है, और किसी मनुष्यमात्र का काम नहीं हो सकता। वही आ करके संगम पर राजयोग सिखाते हैं और नई दुनिया की स्थापना करते हैं।

मनुष्यों की बुद्धि बिल्कुल ही भ्रष्ट बन गई है। स्वर्ग को नर्क समझ लेते हैं। शास्त्रों में क्या कहा? शास्त्रों में लिखा हुआ है- स्वर्ग में भी असुर थे। वो ऋषियों-मुनियों की /मौत कर देते थे और हड्डियों का ढेर लगा देते थे। ये तो सब नर्क में होता है श्रेष्ठ आत्माओं को दुःख देना। स्वर्ग में ऐसा नहीं होता है। कहते हैं वहाँ भी कंसी, जरासिधी, हिरण्यकश्यप आदि थे। तो ये शास्त्रों में कहाँ की बातें लिखी हुई हैं? (किसी ने कहा- ये संगमयुग की यादगारें हैं) ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया की बातें हैं।

जब कृष्ण की आत्मा प्रत्यक्ष होती है द्वापरयुगी शूटिंग के आदि में, तो उस समय कंसी, जरासिधी, ये भी प्रत्यक्ष होते हैं। हिरण्यकश्यप आदि भी प्रत्यक्ष होते हैं; क्योंकि शास्त्रों में जो भी नाम हैं, उनके काम के आधार पर दिए हुए हैं। कंस कहा है, कन्याओं को कोसने वालों को कंस कहा जाता है। जरासिधी? जरा माना? जराजीर्ण, पुराने और सिधी माना? सिधी। तो जरासिधियों का राज्य था। ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में किसका राज्य है? पुराने-2 सिधियों का ही राज्य है। उन्हीं के हाथ में सारी सत्ता आ जाती है। और हिरण्याकश्यप? हिरण्य माना सोना और काश्य माना योगबल का तेज और प माना पीना। योगबल कहो, पवित्रता का बल कहो। तो सोने जैसी सच्ची आत्माओं के पवित्रता के काश्य = तेज को पीने वालों को कहा जाता है श्रेष्ठ जो हीरे समान, हीरे, मोती, जवाहरात समान आत्माएँ हैं, उनको उन्होंने अपनी मुट्ठी में कर रखा है।

परमात्मा बाप को नई दुनिया की स्थापना करने के लिए वो सच्चे हीरे नहीं मिलते। मिले न फूल तो काँटों से दोस्ती कर ली। काँटों को ही परमात्मा को आ करके फूल बनाना पड़ता है। जिससे रुद्र माला तैयार होती है। कोई अंधे हैं, कोई लूले हैं, कोई काने हैं, कोई कुब्जे हैं, कोई कोढ़ी हैं, कोई कैसे हैं। तो नयनहीन, बुद्धिहीन मनुष्यों का हाल देखो कैसा है।

बाप आ करके समझाते हैं कि तुम मुझे भूल गए हो मेरी तो शिवजयंती भी तुम भारत में ही मनाते हो। दूसरे देशों में शिव जयंती नहीं मनाई जाती है। गाया भी जाता है शिवरात्रि को आते हैं।

कौन-सी रात्रि? यह ब्रह्मा की बेहद की रात्रि है। ब्रह्मा कौन-से युग में होता है? सतयुग-त्रेता में ब्रह्मा होता है क्या, जो सतयुग-त्रेता में ब्रह्मा का दिन कहें, द्वापर-कलियुग में ब्रह्मा की रात्रि कहें? नहीं, वहाँ तो ब्रह्मा और ब्राह्मण होते ही नहीं। तो कहाँ की बात है? संगमयुग में ही ब्रह्मा की जब घोर अज्ञान-अंधकार की रात्रि होती है, ब्रह्मा के मुख से परमपिता शिव बोलते हैं। मुरलियों में 1966 में घोषणा कराई, बोला- ''पुरानी दुनिया का विनाश और नई दुनिया की स्थापना 10 वर्ष में हो जावेगी।'' (मु.30.8.66 पृ.1 आदि) उस समय ब्रह्मा अज्ञान अंधेरे में। क्या कहेंगे था या ज्ञान के उजाले में था? ज़रूर अज्ञान-अंधेरे में था। ब्रह्मा भी उस बात की गहराई को नहीं समझ सका और ब्राह्मण भी नहीं समझ सके। उन्होंने समझ लिया कि 10 वर्ष में पुरानी दुनिया का विनाश और नई दुनिया की स्थापना का मतलब सारी 500 करोड़ मनुष्य-आत्माओं का विनाश होगा और नई दुनिया स्थापन हो जाएगी; लेकिन बाबा ने तो वाणी में बोला हुआ था- ''विनाश ज्वाला इस रुद्र ज्ञान यज्ञ कुण्ड से प्रज्ज्वलित हुई।'' (अ.वा.3.2.74 पृ.13 अंत) यज्ञ कुण्ड से विनाश ज्वाला प्रज्ज्वलित होगी। विनाश यज्ञ कुण्ड में होगा और स्थापना कहाँ होगी? स्थापना बाहर की दुनिया में होगी? नहीं। स्थापना और विनाश दोनों पैरलल चलते हैं।

यज्ञ के आदि से ही स्थापना के साथ-2 यज्ञ-कुण्ड से विनाश ज्वाला भी प्रज्ज्वलित हो चुकी थी, जैसा अव्यक्त वाणी में बोला। कौन निमित्त बने? ब्रह्मा बाप और ब्राह्मण बच्चे निमित्त बने। तो जो विनाश ज्वाला को प्रज्ज्वलित करने के निमित्त बने हैं, उनको ही अंत में सम्पन्न भी करना पड़े; क्योंकि विनाश ज्वाला जब तक सम्पन्न नहीं होगी तब तक स्थापना की प्रत्यक्षता नहीं हो सकती। तो ये ब्रह्मा की बेहद की रात्रि है यानी ब्रह्मा और ब्राह्मण जब घोर अज्ञान के अंधेरे में आ जाते हैं तो परमात्मा बाप की वाणी के अर्थ को भी समझ नहीं सकते।

बाप संगम पर आ करके रात्रि से फिर दिन अर्थात् नर्क से स्वर्ग बनाते हैं। ब्रह्मा की रात्रि को क्या बना देते? ब्रह्मा का दिन बनाय देते। जो प्रदर्शनी अंक में चित्र में दिखाया हुआ है- ज्ञान-सूर्य प्रगटा, अज्ञान अंधेर विनाश। आधा पेज में नीचे दिखाया हुआ है ज्ञान-सूर्य शिव के रूप में और 5 विकार रूपी चोर-डकैत भाग रहे हैं, अज्ञान का अंधेरा नाश हो रहा है। कोई स्थूल सूर्य है क्या? वो तो बिंदु है। तो बिंदु कैसे ज्ञान का उजेला करेगा? इसलिए ऊपर उसी पेज पर आधे में चित्र दिखाया

गया है। क्या दिखाया है? शिव (ज्योति) और शंकर-(मूर्ति) को अलग-2 करके दिखाया गया है। यानी ज्ञान-सूर्य प्रत्यक्ष होता है; लेकिन वो किसके द्वारा प्रत्यक्ष होता है? तीसरे (शिव) नेत्र के द्वारा प्रत्यक्ष होता है जिसको त्रिनेत्री कहते हैं। इसलिए शास्त्रों में ये गायन है कि शंकर ने काम देव को भस्म किया। तो 5 चोर-डकैतों में से पहला जो मुखिया है, (कामविकार) वो अगर भस्म होगा, तो बाकी तो 4 अपने-आप ही भाग खड़े होंगे। तो कोई स्थूल सूर्य की बात नहीं है कि वो प्रगटा तो अज्ञान अंधेर विनाश हो गया। ये तो ज्ञान-सूर्य (ज्योतिबिंदु) की बात है। ज़रूर कोई ब्राह्मण बच्चे के द्वारा ही प्रत्यक्ष होता है; इसलिए शंकर को जनेऊ भी दिखाते हैं। जनेऊ कौन पहनते हैं? ब्राह्मण।

तो शिवरात्रि के अर्थ का कोई को पता नहीं है ऐसी- वो कौन-सी रात्रि में प्रत्यक्ष होता है? वास्तव में ब्रह्मा की अज्ञान अंधकार की रात्रि जब होती है। घोर अज्ञान के अंधकार की रात्रि 1966 में नहीं कहेंगे, 1969 में भी नहीं कहेंगे; क्योंकि उस समय द्वापरयुगी शूटिंग की शुरुआत हुई, सतयुगी शुरुआत 1976 में कहेंगे। (1973 से) जब मेले-मलाखड़े शुरू हो चुके (थे)। मेलों में मैला इकट्ठा होता है। ढेर गंदी दृष्टि-वृत्ति वाली आत्माएँ ब्राह्मणों के संग में आने लगीं, तो ब्राह्मणों की अवस्था भी तामसी बनने लगी। तो ऐसे तामसी युग में, तामसी पीरियड में वो ज्ञान-सूर्य परमपिता+परमात्मा प्रत्यक्ष होता है। नारकीय संगठन को, ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में आ करके स्वर्गीय संगठन बनाने की शुरुआत (1976) करते हैं।

शिवरात्रि के अर्थ का कोई को पता नहीं। इसलिए उस समय बताया कि बाप की प्रत्यक्षता कौन-से बच्चे करेंगे! बच्चे भी तो दो प्रकार के हैं दुनिया में। ब्राह्मणों की दुनिया में भी दो प्रकार के बच्चे हैं- (जो) बाप को प्रत्यक्ष करेंगे पहले एक देशी और दूसरे विदेशी। तो कौन-? विदेशी बच्चे पहले बाप को प्रत्यक्ष करेंगे। क्यों, भारतवासियों ने क्या गुनाह किया? (जो) विदेशियों की बुद्धि उतनी तमोप्रधान नहीं होती। वो न ज़्यादा तमोप्रधान बनते, न ज़्यादा सतोप्रधान बनते। फिर भी उनकी सात्विक बुद्धि है। तो सात्विक बुद्धि होने के कारण वो बात की गहराई को जल्दी पकड़ लेते, परमात्मा बाप के स्वरूप को जल्दी प्रत्यक्ष कर लेते। तो उन्होंने, बाहर के विदेशी ने समझ लिया। बाहर के विलायती विदेशियों की बात नहीं है। ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में ही जो बीजरूप विदेशी (दक्षिण भारतीय) आत्माएँ हैं, विदेशी धर्मों की जो (7) बीज हैं, वो पहले (विदेशी बने)

बाप को पहचानते हैं। (ब्रह्मा के 4 प्रथम पुत्र हैं-) सनत, सनातन, सनंदन, सनतकुमार। उनमें से सनतकुमार है देवी-देवता सनातन धर्म का (गुप्त) बीज। वो भी (कलियुगांत में) अपने को नहीं पहचान सकता। कब पहचानता है? जब वो (3 मुख्य) विदेशी उस बाप को प्रत्यक्ष करें। कौन? इस्लाम धर्म का बीज, बौद्धी धर्म का बीज और क्रिश्चियन धर्म का बीज। तो वो चार दिशाओं से कनेक्टेड आत्माएँ हैं। चार धर्म खण्डों की बीज हैं। वो विदेशी बने बाप को प्रत्यक्ष करते हैं। कब? 1976 में। जब सतयुगी (40 वर्षीय) शूटिंग का अंत होता है।

वास्तव में भगवान है निराकार। मनुष्यों का तो जन्म-बाई-जन्म शरीर का नाम बदलता है। (परमपिता+)परमात्मा कहते हैं मेरा शारीरिक नाम नहीं है। मेरा नाम शिव ही है, और कोई नाम नहीं है। ये ढेर-के-ढेर जो (देह) के नाम पड़े हुए हैं, वो किस आधार पर? केदारनाथ, बद्रीनाथ, (किसी ने कुछ कहा- जैसे काम के आधार पर जो-2 काम किए, शरीर में प्रवेश करके वैसे-2 उनके नाम पड़ते चले गए।

मैं सिर्फ बूढ़े वानप्रस्थ तन का आधार लेता हूँ। बेहद में बूढ़ा किसे कहा जाता है? हद में तो बूढ़ा उसे कहा जाता है जिसको झुर्रियाँ पड़ गई हों, सफेद बाल हो गए हों। बेहद में बूढ़ा माना अनुभवी और वानप्रस्थ माना वाणी से परे। वाणी से परे माना वाणी में न आए, वाणी में आने की जिसको दरकार ही नहीं। कोई कितना भी उकसाए; लेकिन वो वाणी में न आए। कितना भी उत्तेजित करे; लेकिन उसे वाणी में आने की दरकार ही नहीं। ऐसा तो वो ही हो सकेगा जो निःसंकल्पी स्टेज में हो, जिसे पक्का निश्चय हो चुका हो कि हमको जो पाना था सो पा लिया। तो बूढ़े वानप्रस्थ तन का आधार लेता हूँ। ऐसे तो बाबा कहते हैं तुम सब बच्चों की वानप्रस्थ अवस्था है। तो क्या सब वानप्रस्थी बन जाते हैं? नहीं (नं.वार हैं) ।

तो 1969 में जब ब्रह्मा ने शरीर छोड़ा तो बताया कि बाप वानप्रस्थी हो गया। वानप्रस्थी हो गया माना? जो यज्ञ के आदि वाली प्रजापिता वाली सोल थी वो यज्ञ में दुबारा आती है और ब्रह्मा के (सूक्ष्म) शरीर छोड़ने के बाद वानप्रस्थी हो जाती है। वानप्रस्थी हो जाना माना? उसके अंदर में जो संकल्प हैं, उन संकल्पों को स्टॉप लगाने की उसमें ताकत (आती) है। उसे बोलने की दरकार नहीं।

कब तक रहती वानप्रस्थी? जब तक ब्रह्मा की आयु 100 वर्ष पूरी न हो। 1936 में जिस प्रजापिता ब्रह्मा की आयु 60 इयर्स, उसमें 40 इयर्स और एड किए तो 1976 आता है। तो 1976 में वो प्रजापिता ब्रह्मा 100 साल का पूरा हो जाता। इसलिए मुरलियों में भी बोला और शास्त्रों में भी बताया कि ब्रह्मा की आयु 100 साल। (अ.वा.21.1.69 पृ.21 मध्य) ब्रह्मा 100 वर्ष की अवस्था में खत्म हो जाता है। ''मृत्यु लोक में ब्रह्मा की आयु पूरी होती है।'' (मु.ता.16.10.84 पृ.2 अंत)

तो प्रजापिता ब्रह्मा का जब मृत्यु लोक समाप्त होगा तो कौन-सा लोक शुरू हुआ? ज़रूर अमरलोक कहेंगे और अमरनाथ के बच्चे भी ज़रूर अमर होंगे। तो वो एडवांस पार्टी की शुरुआत होती है। जो भी आत्माएँ उस समय (B.K.से) ट्रांसफर होती हैं, जिनका क्लास ट्रांसफर होता है, वो भी अमर स्टेज का अनुभव करती हैं, अवस्था भल ऊपर-नीचे होती है। तो बताया- मैं सिर्फ वानप्रस्थ अवस्था में आता हूँ, वानप्रस्थ तन का आधार लेता हूँ। यह पूज्य था। अब पुजारी बना।

शिव+बाबा आ करके स्वर्ग रचते हैं। आ करके स्वर्ग रचते हैं कि आ करके चले जाते हैं, तब मनुष्य देहधारी गुरू स्वर्ग रचते हैं? यहाँ तो बोला- शिव+बाबा आ करके स्वर्ग रचते हैं। कहाँ आ करके हैं- सूक्ष्मवतन में स्वर्ग रचते? सूक्ष्मवतन में थोड़े ही स्वर्ग रचा जाता। इस साकार सृष्टि पर ही साकार (में) स्वर्ग की स्थापना होती है। इसलिए मुरलियों में बोला- ''निराकार से क्या निराकारी वर्सा चाहिए?'' निराकार से तो निराकारी वर्सा ज्ञान-रत्नों का मिल सकता है। अगर साकारी वर्सा चाहिए तो ज़रूर देने वाला भी साकार (शरीर) में चाहिए। डॉक्टर होगा, वो ही डॉक्टर बनाएगा। वकील होगा, वो वकील बनाएगा। जो पहले (साकार देह से) देवता बनेगा, वो ही देवता बनाएगा। तो देवता बनाने वालों को पढ़ाई पढ़ाने वाला भी प्रैक्टिकल में चाहिए। तो हम <u>उनके</u> बच्चे हैं तो ज़रूर हम स्वर्ग के मालिक होने चाहिए। 'ज़रूर' शब्द क्यों लगाया? कि अगर प्रैक्टिकल में उसके बच्चे हैं तो हम स्वर्ग के मालिक भी होने चाहिए प्रैक्टिकल में।

वह शिवबाबा है ऊँच-वि.शं.ऊँच का पार्ट अपना। हरेक आत्मा में अपना (नं.वार) सुख-दुःख का पार्ट नूँधा हुआ है।

देवी-देवताएँ 84 जन्म भोग पूज्य से अब पुजारी बन गए हैं। कौन? (वैष्णों) देवी-देवताएँ। और दूसरे धर्म की (संन्यासी) आत्माएँ नहीं। दूसरे धर्म की आत्माएँ 83 जन्म भोगेंगी, 82 जन्म भोगेंगी, कम जन्म भोगेंगी। लेकिन जो देवी-देवता सनातन धर्म के पक्के हैं, वो पूरे 84 जन्म भोगते हैं और फिर पुजारी बन जाते हैं।

तुम जानते हो हम शिवबाबा के वारिस बने थे, (और) कोई देहधारी गुरू के वारिस नहीं बने। देहधारी गुरू की मत पर चल करके हमने प्राप्ति नहीं की। शिवबाबा ने स्वर्गवासी बनाया था। तब उनको सब याद करते हैं- ओ गॉडफादर, रहम करो! कोई किसी को याद करता है तो कभी-न-कभी ज़रूर कोई प्राप्ति प्रैक्टिकल में हुई है ना, तब तो याद करते हैं। कि परमात्मा शिव आएगा और आ करके वापस पढ़ाई पढ़ाके चला जाएगा, प्राप्ति कुछ भी न हो और याद भी करे सारी दुनिया, सो कैसे हो सकता(?) साधु भी साधना करते हैं क्योंकि यहाँ दुःख है तो (सदाकाल) निर्वाणधाम जाना चाहते हैं।

‘‘आत्मा परमात्मा में लीन हो जाती वा (नहीं तो) हम आत्मा सो परमात्मा (अब)’’, यह समझना तो राँग है। न लीन होती है, न आत्मा सो परमात्मा बनता है। आत्मा परमात्मा में लीन होने का अर्थ ज़रूर है। यानी आत्माएँ जो भिन्न-2 प्रकार की तुंडे-2 मतिर्भिन्ना हैं, उनके भिन्न-2 प्रकार के संकल्प परमात्मा बाप के संकल्प में समा जाते हैं। जो (आदम) बाप का संकल्प सो बच्चों का संकल्प। बाकी कोई आत्मा का अस्तित्व नष्ट नहीं होता है। आत्मा सो परमात्मा भी नहीं होती कि हरेक आत्मा सो परमात्मा हो जाएगी। ये तो देहधारी गुरुओं ने प्रजापिता आदम को फॉलो कर लिया है । कि उसकी आत्मा सो परमात्मा जैसी बन सकती है, तो हम क्यों नहीं बन सकते? भगवान आएगा तो एक को भगवती बनाएगा भगवान, एक पेयर को भगवान-भगवती बनाएगा कि सारी दुनिया विश्व का मालिक बन जाएगी? विश्व का मालिक तो एक ही (व्यक्ति) होगा।

अब तुम कहते हो- हम आत्मा परमधाम की रहने वाली हैं। देवता कुल में आएँगी। फिर हम आत्मा सो देवी-देवता 84 जन्म भोगेंगी। हम सो आत्मा, फिर दैवी कुल से क्षत्रिय कुल में, फिर

वैश्य में, फिर शूद्र वर्ण में आती हैं। (एक) शिवबाबा (अनिश्चय के) जन्म-मरण में नहीं आते। जन्म-मरण में कौन आते हैं? जो परमात्म-पार्ट है वो कभी अनिश्चय रूपी चक्र में नहीं आ सकता।

बाप आते हैं, सिर्फ आ करके (एक) भारत (देश) को स्वर्ग बनाते हैं। गाया भी जाता है सतयुग में सूर्यवंशी श्री लक्ष्मी-नारायण की डिनायस्टी थी। तो ये जो गायन हैं शास्त्रों में वो किस समय के गायन हैं? संगमयुग के गायन हैं। सतयुग में जो आठ पीढ़ियों में ल.ना. होते हैं, उनका शास्त्रों में कोई गायन नहीं है, कोई हिस्ट्री नहीं है। जो संगमयुग में ल.ना., नर से डायरैक्ट नारायण बनते हैं नर से प्रिंस नहीं (बनते)। नर से प्रिंस बनने का गायन नहीं है। गायन क्या है? नर से नारायण (बने)। तो उनका शास्त्रों में गायन है। जैसे क्रिश्चियन घराने में एडवर्ड दी फर्स्ट, एडवर्ड दी सेकिंड, थर्ड चलता है। वैसे वहाँ भी दी ल.ना. फर्स्ट, सेकिंड, थर्ड ऐसे 8 डिनायस्टी चली।

अभी तुम ब्राह्मणों का तीसरा नेत्र खुला है। क्या? कि 8 डिनायस्टी चली हैं तो उनको चलाने वाला भी तो कोई प्रैक्टिकल में (भगवान) होगा, कि (परमपिता) परमात्मा शिव ब्रह्मा के तन में वाणी चलाके चला जाएगा और फिर डिनायस्टी अपने-आप स्थापन हो जाएगी? वाणी में तो कहा है कि मैं (साकार में) राजधानी स्थापन करके जाता हूँ। ऐसे ही नहीं चला जाता बीच में। मैं तुम (सब मेल) बच्चों को साथ ले करके जाऊँगा। साथ रहेंगे, साथ जिएँगे, साथ खेलेंगे, खाएँगे और साथ-साथ ही वापस जाएँगे।

बाप बैठ आत्माओं से बात करते हैं। आत्माओं से क्या बिंदी-2 से बात करते हैं? और बाप बैठ अगर बिंदु की ही बात हो तो बिंदु! ये कोई कहा जाता है- सुप्रीम सोल बैठ और लेट और चल और भागकर? बैठ बात करते हैं माना कोई शरीर में बैठ करके बात करते हैं। किससे बात करते हैं? आत्माओं से। क्या बिंदी से बात करते हैं? ज़रूर बिंदी शरीर रूप में है। परमात्मा बाप भी शरीर रूप में है। तो आत्माओं से बात करते हैं माना आत्मिक स्टेज में रहने वाले बच्चों से बात करते हैं, देहअभिमानी साँड़ों से बात करते ही नहीं।

तुम ऐसे 84 का चक्र लगाकर इतने-2 जन्म लेते आए हो। (तेरा) वर्णों का भी एक (विराट रूप का) चित्र बताते हैं। जिसमें देवता, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र बनाते हैं। अब तुम जानते हो इस समय

हम (सब) सो ब्राह्मण चोटी, ईश्वरीय औलाद हैं। कैसे ब्राह्मण हैं? चोटी के ब्राह्मण हैं। चोटी माना शिखर। सबसे ऊँची स्टेज के ब्राह्मण।

प्रैक्टिकल में इस सहज राजयोग और ज्ञान से हमको स्वर्ग के (अतीन्द्रिय) सुख घनेरे मिलते हैं। इस राजयोग का नाम क्या दिया? सहज राजयोग। अगर कठिन भासता है तो साबित होता है कि अभी हम परमात्मा बाप से पढ़ाई नहीं पढ़ रहे हैं, कोई ज़रूर देहधारियों को गुरू बनाया हुआ है और सारे राज़ को जानने वाले नहीं बने हैं। तो बीच-2 में इरिटेशन (क्रोध) पैदा होता है। हम खुद भी उत्तेजित होते हैं और दूसरों को भी उत्तेजित करते हैं। राजयोग है ही राज़ को जानने वालों के लिए। जिन्होंने सारा राज़ परमात्मा बाप से समझ लिया है। तो कुछ भी परिस्थिति हो जाए, कोई भी समस्या आ जाए, उनके अंदर किसी प्रकार का उद्वेग पैदा नहीं होगा।

कोई तो सूर्यवंशी राजधानी का वर्सा लेते हैं। कोई अगर पूछे कि अभी पढ़ते-2 हमारा शरीर छूट जाए तो क्या पद मिलेगा? तो बाप बतलाय सकते हैं; लेकिन पूछता कोई नहीं है। क्यों नहीं पूछता? क्योंकि जो ज्ञानी बच्चे होंगे, सहज ज्ञानी, उनकी बुद्धि में तो बैठा हुआ ही है कि (फ्रीज में) हमारा शरीर छूट ही नहीं सकता।

परमात्मा बाप से जब हमने ये अंत का जन्म लिया है, तो अंतिम जन्म में चोला हम क्यों छोड़ें? चोला छोड़ेंगे तो छोटा बच्चा बनेंगे, छोटा बच्चा बनेंगे तो ज्ञान के जो राज़ हैं वो नहीं समझ पाएँगे। तो जो पूछने वाले हैं, इसका मतलब ज्ञानी हुए या अज्ञानी? अज्ञानी। तो अज्ञान की स्टेज में जब स्वयं हैं तो उनको पद क्या मिलेगा? तो बाप बताय सकते हैं।

योग से ही आयु बढ़ती है, विकर्म विनाश होते हैं। और कोई उपाय पतित से पावन बनने का है नहीं। पतित+पावन (सीता राम) कहने से ही भगवान याद आते हैं। क्या कहा? कहने से क्यों याद आते हैं? ज़रूर <u>उन्होंने</u> पतितों को पावन बनाने का कोई कर्म किया है तो याद आता है। परंतु (दोनों में) भगवान है कौन? यह नहीं जानते हैं।

बाप कहते हैं मैं आता ही भारत में हूँ। यह (सोम-नाथ) <u>मेरा</u> बर्थ प्लेस है। सोमनाथ का <u>मंदिर</u> कितना <u>आलिशान</u> था! यह <u>बाप</u> बैठ बच्चों को समझाते हैं। जिसके फिर बाद में शास्त्र बनते हैं।

पहले मंदिर, फिर शास्त्र बनाए जाते हैं। पहले चित्र बनते हैं, मूर्तियाँ बनती हैं, फिर शास्त्र बनाए जाते हैं। शूटिंग पीरियड में भी ज़रूर ऐसा ही होता है। पहले क्या होता है? पहले चित्र तैयार हुए साक्षात्कार से, फिर बाद में? बाद में ये मोटे-2 धर्मग्रंथ बनाए गए हैं ब्राह्मणों की दुनिया में, 1969 के बाद, जब मम्मा-बाबा ने शरीर छोड़ दिया। मम्मा-बाबा जब तक जीवित रहे तब तक छोटी-2 पुस्तकें/बुकलेट्स तैयार होती थीं, मोटे-2 धर्मग्रंथ नहीं तैयार हुए थे। तो भक्तिमार्ग में यह यादगार बनने शुरू होते हैं। जब पुजारी बनते हैं तो पहले-2 (एक) सोमनाथ का मंदिर बनाते हैं। भारत सतयुग-त्रेता में बहुत साहूकार था। मंदिरों में अथाह धन था। भारत हीरे तुल्य था। अब तो भारत कंगाल, कौड़ी तुल्य बन गया है। फिर बाप आ करके भारत को हीरे तुल्य बनाते हैं।

कोई से भी पूछो क्रियेटर कौन है? कहेंगे परमात्मा। तो वो क्रियेटर परमात्मा कौन है, कहाँ है? वो तो सर्वव्यापी है। जब क्रियेटर है तो ज़रूर क्रियेशन भी है। क्रियेशन और क्रियेटर ये अविनाशी हुए या विनाशी हुए? जो चीज़ क्रियेट की जाती है वो पहले थी? नहीं थी। आत्मा को अविनाशी कहेंगे या विनाशी कहेंगे? आत्मा तो अविनाशी है। तो आत्मा क्रियेट की जाती है क्या? सुप्रीम सोल बाप बैठ आत्मा को क्रियेट करते हैं क्या? नहीं। तो क्रियेटर ज़रूर कोई साकार व्यक्तित्व होना चाहिए। किसको क्रियेट करता है? ब्राह्मणों की पहली रचना को। जो ब्राह्मण पहले नहीं थे वो ब्राह्मण क्रियेट किए जाते हैं। तो पूछो कि क्रियेटर कौन है? कहेंगे वो तो सर्वव्यापी है। परमात्मा कह देंगे- कुछ भी जानते नहीं। अहम् ब्रह्मास्मि कह देंगे; हम भी ब्रह्मा, तू भी ब्रह्मा; हम भी शिव, तुम भी शिव; आत्मा सो परमात्मा कह देंगे; लेकिन ऐसा होता नहीं है। परमात्मा कोई सर्वव्यापी बन करके संसार में प्रत्यक्ष नहीं होता। परमात्मा तो एकव्यापी बन करके आता है।

तुम समझते हो- सारा झाड़ जड़-जड़ीभूत अवस्था को पाया हुआ है। सब नाग-बलाएँ हैं, बिच्छू-टिडन हैं। नारद की कहानी है ना! पतित आत्मा पवित्र लक्ष्मी अथवा नारायण को कैसे वर सकेगी? विकार में गए तो फिर पासपोर्ट वापस ले लेते हैं। अपने को देखा जाता है हम ऐसे लायक बने हैं जो मम्मा-बाबा के गद्दी-नशीन बन सकें? तो कुमारका दादी क्या कहेंगी? अपने को लायक कहेंगी या नालायक कहेंगी? वो तो कहेंगी हम तो लायक बन चुके। हमने मम्मा-बाबा की गद्दी ले ली; लेकिन वो मम्मा-बाबा (ब्रह्मा-सरस्वती) की गद्दी के लिए इशारा नहीं दिया है। मुरली में कहा

है- ''वास्तव में इन ब्रह्मा-सरस्वती को भी मम्मा-बाबा नहीं कहेंगे।'' (मु.ता.31.3.72 पृ.1 मध्य) कोई तो वास्तविक मम्मा-बाबा कोई दूसरे हुए ना! उनकी गद्दी लेने की बात है। तो यह है ही पतित दुनिया।

पवित्रता ही मुख्य है। अब तो नो हेल्थ, नो वेल्थ, नो हैप्पीनेस। यह है रूण्य के पानी मिसल राज्य। इस पर भी दुर्योधन की कहानी शास्त्रों में है। दुर्योधन विकारी को कहा जाता है। तो विकारी की दृष्टि भी कैसी होगी? विकारी दृष्टि होगी। द्रौपदियाँ कहती हैं हमारी लाज रखो। इन दुर्योधन-दुःशासनों से बचाओ। नाम क्या रखा है? दुष्ट (शासन) और दुर्योधन माना (दुष्ट) युद्ध करने वाला, विकारों का भी युद्ध करेंगे तो कैसे करेंगे? हाथ-पाँव बाँध करके रख देंगे। दुर्योधन और दुःशासन बलात्कारी हुआ ना! तो ये दुष्ट युद्ध हुआ ना! । कैसा शासन? दुष्ट शासन। जो (प्यार का) ईश्वरीय शासन होना चाहिए वैसा शासन नहीं।

तो कहती हैं हमारी लाज रखो। सब द्रौपदियाँ हैं ना! यह बच्चियाँ स्वर्ग के द्वार हैं। क्यों, बच्चों ने क्या पाप किया? बच्चों को क्यों नहीं बताया? पुरुषों को क्यों नहीं बताया स्वर्ग के द्वार हैं? माताओं को स्वर्ग का द्वार क्यों बताया? (किसी ने कहा- सहनशक्ति माताओं में...) सहनशक्ति भी देव-आत्माओं में ज़्यादा होती है, जो आसुरी प्रकृति के होते हैं उनमें सहनशक्ति नहीं होती और कन्याएँ-माताओं में पवित्रता के प्रति ज़्यादा आस्था होती है और पुरुषों में उतनी आस्था नहीं होती है; इसलिए भारत माता वंदे मातरम् गाया जाता है, कहा जाता है, वंदे पितरम् नहीं कहा जाता। तो ये बच्चियाँ ही स्वर्ग के द्वार खोलती हैं।

वह शंकराचार्य उवाच है '(नारी नरक का द्वार)' और यह है शिवाचार्य उवाच। बाप कितना अच्छी रीति बैठ समझाते हैं। जिनका बुद्धियोग पूरी रीति लगा हुआ होगा तो उनको धारणा होगी। नॉलेज ब्रह्मचर्य में ही पढ़ी जाती है।

बाप कहते हैं गृहस्थ-व्यवहार में रहते कमल-फूल समान रहना है। दोनों तरफ निभाना है। दोनों तरफ माना? गृहस्थ-व्यवहार का भी निर्वहन करना है और अलौकिक कार्य का भी निर्वहन करना है और मरना भी ज़रूर है। कहाँ से मरना है? पुरानी देह और देह की दुनिया से बुद्धियोग को

तोड़ना माना मरना। मरने के समय मनुष्य को मंत्र देते हैं। तो ये है जीते जी मरने की बात। जब जीते जी मरने का टाइम आता है तब उनको असली मंत्र मिलता है- मन्मनाभव। जो बाप का संकल्प सो बच्चे का संकल्प।

बाप कहते हैं कि तुम सभी मरने वाले हो। मौत का टाइम आ गया। जब मौत का टाइम होता है तो ये मंत्र दिया जाता है। क्या मंत्र कब दिया जाता है? वो मंत्र मिलता भी तभी है जब मौत का टाइम होता है। कौन-सा मंत्र? कि जो बाप का संकल्प है उस संकल्प में अपने को मर्ज़ कर दो, दूसरे आलतू-फालतू संकल्प मत चलाओ।

मैं कालों का काल सभी को वापस ले जाने वाला हूँ। तो खुशी होनी चाहिए ना । फिर जो अच्छी रीति पढ़ेंगे वो स्वर्ग के मालिक बनेंगे, नहीं पढ़ेंगे तो प्रजा पद में आ जाएँगे। फिर तो कल्प-कल्पांतर, जन्म-जन्मांतर के लिए प्रजा पद पाएँगे। प्रजा क्या करेगी? राजा क्या करता है और प्रजा क्या करती है? राजा राज्य करता है और प्रजा भरी ढोती है। कहते हैं आधा में जाम और आधा में रईयत। जितनी भी प्रॉपर्टी राज्य की तैयार होती है, उसमें आधे में जाम अर्थात् राजा भोग करता है और आधी प्रॉपर्टी सारी प्रजा भोग करती है। तो क्या फायदा हुआ प्रजा बनने का?

यहाँ तुम आए हो राजयोग से राज्य पद लेने के लिए। यह पढ़ाई है। इसमें अंधश्रद्धा की बात नहीं है। यहाँ राजाई के लिए पढ़ाई है। जैसे उस पढ़ाई की एम-ऑब्जेक्ट होती है- बैरिस्टर बनूँगा, तो योग ज़रूर पढ़ाने वाले टीचर से रखना पड़े, बैरिस्टर से योग रखना पड़ेगा। यहाँ तुमको भगवान पढ़ाते हैं तो उनसे योग लगाना है।

बाप कहते हैं- मैं बहुत दूर परमधाम, से आता हूँ। परमधाम जितना ऊँचा है उतना ऊँचा और कोई वतन नहीं है। सूक्ष्मवतन से भी ऊँच। वहाँ से आने में मुझे सेकेंड लगता है। उनसे तीखा और कुछ नहीं हो सकता। सेकेंड में जीवनमुक्ति देता हूँ। जनक का मिसाल है।

अभी तो पुरानी दुनिया नर्क है। नई दुनिया स्वर्ग को कहा जाता है। बाप नर्क का विनाश करा करके स्वर्ग की स्थापना कराते हैं। क्या कहा? पहले स्थापना कि पहले विनाश? (किसी ने कहा- पहले स्थापना कराके विनाश कराते हैं।) यहाँ तो बोला कि बाप नर्क का विनाश कराकर स्वर्ग की

स्थापना कराते हैं। पहले सद्गुणों की स्थापना होती है। नई दुनिया की स्थापना जब होती है, तो नर्क का विनाश स्वतः ही हो जाता है; लेकिन होता तब है जब उसके भी साज-सामान तैयार हो जाएँ; क्योंकि जब तक नर्क का विनाश नहीं होता, उसकी मान्यताओं का विनाश नहीं होता तब तक स्वर्ग की स्थापना भल हो चुकी हो; लेकिन वो प्रत्यक्ष नहीं हो सकती। तो ब्राह्मणों की संगमयुगी दुनिया में भी पवित्र रहने वाली आत्माएँ नहीं हैं, ऐसे नहीं कह सकते। हैं; लेकिन वो पवित्र आत्माओं का संगठन तब तक प्रत्यक्ष नहीं हो सकता जब तक जो आसुरी संस्कार वाले यज्ञ के अंदर छुप करके बैठते हैं, वो जब तक ठंडे न पड़ जाएँ। (ओम् शांति)

Contact Us

Address

A-351-352, Vijayvihar, Phase-1, Rithala, Delhi- 110085

Mobile - 9891370007, 9311161007

Email - a11spiritual1@gmail.com

Website – WWW.PBKS.INFO/ADHYATMIK-VIDYALAYA.COM

Youtube – ADHYATMIK-VIDYALAYA OR AIVV

@A1SPIRITUALUNIVERSITY

Twitter - @adhyatmikaivv

Instagram - @adhyatmikvidyalaya

Linkedin – linkedin.com/company/adhyatmik-vidyalaya

01.01.2025